पटसन ज्योति

अंक 7

सितम्बर, 2022

भापनि

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार की संस्था
The Jute Corporation Of India Limited
A Government of India Enterprise under Ministry of Textiles

प्रधान कार्यालय, कोलकाता में श्री रमेश कुमार, विभागाध्यक्ष (रा.भा.) एवं श्री जे.पी.के. मंडल, वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी) के साथ राजभाषा संबंधी निरीक्षण करते हुए भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सुश्री अंशु गुप्ता, सहायक निदेशक (रा.भा.) तथा श्री राजेश कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी।

हिंदी दिवस का शुभारंभ करते हुए श्री अमिताभ सिन्हा, निदेशक (वित्त) एवं अन्य अधिकारीगण।

हिंदी सांस्कृतिक सह पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित श्री अजय कुमार जॉली, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री अमिताभ सिन्हा, निदेशक (वित्त), श्री कल्याण कुमार मजुमदार, महाप्रबंधक (परि./विप.), श्री रमेश कुमार, विभागाध्यक्ष (रा.भा.) एवं अन्य अधिकारीगण।

गृह हिंदी पत्रिका ‘पटसन ज्योति’ का लोकार्पण करते हुए श्री अजय कुमार जॉली, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री अमिताभ सिन्हा, निदेशक (वित्त), श्री कल्याण कुमार मजुमदार, महाप्रबंधक (परि./विप.), श्री रमेश कुमार, विभागाध्यक्ष (रा.भा.) एवं अन्य अधिकारीगण।

पटसन ज्योति परिवार

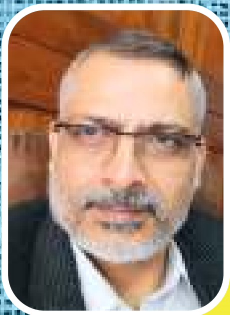

संरक्षक

श्री अजय कुमार जॉली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भापनि, प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मार्ग-दर्शक
श्री अमिताभ सिन्हा
निदेशक (वित्त)

मुख्य संपादक
श्री रमेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) एवं
विभागाध्यक्ष (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री कल्याण कुमार मजूमदार
महाप्रबंधक (परि./विप.)

श्री शान्तनू चक्रवर्ती
मुख्य प्रबंधक (वित्त)

श्री बी.एन.भंसाली
वरिष्ठ प्रबंधक (परि./विप.)

श्री अभिक साहा
कंपनी सचिव

श्रीमती संदीपा सेन दत्ता
वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन)

श्री जे.पी.के. मंडल
वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.		शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1	संदेश	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, प्रधान कार्यालय, कोलकाता	श्री अजय कुमार जॉली	4
2		निदेशक (वित्त)	श्री अमिताभ सिन्हा	5
3		सम्पादकीय, वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) एवं विभागाध्यक्ष (राजभाषा)	श्री रमेश कुमार	6
4	आलेख एवं कहानियाँ	नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वी जयंती	श्री हरि विष्णु	7
5		नैतिक शिक्षा का महत्व	श्रीमती सुभद्रा बायी	8
6		बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान	श्री रतिमय दास	9
7		सम्मिलित कार्य (टीम वर्क)	श्री बिश्वजीत पाल	10
8		प्रदूषण	श्री नारायण राय	11
9		असम की संस्कृति और परंपरा	श्री अनिक कुमार दे	12
11		थोड़ा बेहतर महसूस करें	श्री सेख तेसिक अली	13
12		मन के हारे हार है, मन के जीते जीत	श्री मनीष श्रीवास्तव	14
13		भारत का स्वतंत्रता दिवस	श्री विष्णु प्रसाद डेका	15
12		युद्ध तो नहीं हो रहा - फौजी करते क्या हैं?	श्री चंद्रकांत चौधरी	16
14		मसाई मारा नेशनल रिजर्व	श्री सौम्यदीप घोष	18
15		अयोध्या पहाड़ का भ्रमण	श्री सौमेन कुंडू	20
16		बन्टी का प्रेम	श्री लखमी चन्द	21
17		समोसा पुराण	श्री बी.एन.भंसाली	22
18	काव्यांजलि	अड़े रहो	कुमारी सम्पूर्णा प्रियदर्शनी	8
19		स्वदेशी चाल	श्री अजय कुमार जॉली	9
20		शिव	श्री तरुण देव राय	11
21		संकल्प नवभारत का	श्री निरज कुमार	11
22		वृक्ष की महिमा	श्री पुरुषोत्तम हरि	13
23		पिता	श्री कृष्णा दास	15
24		खुश रहो	श्री नबजित दास	15
25		आजादी का अमृत महोत्सव	श्री शंभू प्र. सिंह	17
26		भारत का सुनहरा रेशा : जूट	श्रीमती अनीता देवी	17

हमारे संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं को सुनने के लिए बारकोड को अपने मोबाइल से स्कैन करें। यह बारकोड रचनाओं के हर पृष्ठ पर संलग्नित है।

प्रकाशन सम्पर्क सूत्र
हिंदी विभाग, भारतीय पटसन निगम लिमिटेड, 15 एन, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता - 700 087

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए पटसन ज्योति परिवार, संपादक एवं प्रबंधकीय मंडल का किसी प्रकार से कोई उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : anjaniprakashan19@gmail.com

संदेश

अजय कुमार जॉली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
प्रधान कार्यालय, कोलकाता-700087

इन दिनों जबकि पूरा देश 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहा है, इस महोत्सव में पूरी ऊर्जा के साथ भाग लेते हुए हमारा निगम भी अपने क्रिया-कलाप के प्रत्येक क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य-निष्पादन करने का प्रयास कर रहा है। इस कड़ी में निगम द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली गृह हिंदी पत्रिका 'पटसन ज्योति' की भूमिका सराहनीय है जो निगम के कार्मिकों को हिंदी में लिखने के लिए प्रेरित करता है। इस पत्रिका का प्रकाशन होने से जहां एक तरफ कार्मिकों, उनके आश्रितों एवं रिश्तेदारों के प्रतिभा में विकास होता है वहीं दूसरी तरफ राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में बढ़ोतरी होती है।

अपनी मैंडेट के अनुसार हमारा निगम देश के जूट व्यापार के क्षेत्र में एक सार्थक भूमिका निभा रहा है। हमारा निगम भारत सरकार द्वारा घोषित जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कच्चे जूट की खरीद करता है और आवश्यकता पड़ने पर वाणिज्यिक क्रिया-कलाप भी करता है। चूंकि अधिकतर जूट के कृषकगण ग्रामीण इलाकों में जूट का उत्पादन करते हैं और उसे इस निगम के विभागीय क्रय केंद्रों में बेचते हैं, इसलिए निगम अपने कार्मिकों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण तुरंत दिलाने की व्यवस्था करता है ताकि जूट कृषकों से जूट की खरीद करते समय भाषा बाधक न बने।

हमारा निगम नियमित रूप से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण, सम्मेलन/संगोष्ठियों, हिंदी कार्यशालाओं आदि का आयोजन करते आ रहा है ताकि कार्मिकगण को राजभाषा हिंदी में कार्य करने की रुझान में इजाफा हो सके।

परंतु राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए स्वेच्छा से हिंदी लेखन को प्रोत्साहन देना बहुत आवश्यक है। अतएव इस पत्रिका में हिंदी लेख देने वाले कार्मिकों को हार्दिक धन्यवाद और इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(अजय कुमार जॉली)

"भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिन्दी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।" – **नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)**

संदेश

अमिताभ सिन्हा
निदेशक (वित्त)
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
प्रधान कार्यालय, कोलकाता-700087

यह देश विभिन्न भाषा-भाषियों का देश है। राजभाषा हिंदी एक माला की तरह है जो विभिन्न राज्यों की फूल रूपी भाषाओं को अपने में पिरो कर रखती है और उनके विचारों का आदान-प्रदान करने में सहायता करती है। निगम भारत सरकार की कार्यान्वियन एजेंसी के रूप में कार्य करता है एवं सीधे जूट कृषकों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कच्चे जूट की खरीद करता है।

हिंदी भाषा के प्रयोग में आने वाली झिझक को दूर करने के लिए समय-समय पर हिंदी संगोष्ठिओं, कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया जाता है ताकि कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो सके।

यह अत्यधिक प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय पटसन निगम लिमिटेड 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के सुअवसर पर इस गृह हिंदी पत्रिका 'पटसन ज्योति' के सातवें अंक का प्रकाशन कर अपनी सार्थकता का परिचय दिया है और राजभाषा नीतियों एवं प्रावधानों को कार्यान्वित करने की अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन कर रहा है।

मैं हिंदी लेख, कविता आदि देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं एवं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

(अमिताभ सिन्हा)

सम्पादकीय

रमेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त) एवं
विभागाध्यक्ष (राजभाषा)
भारतीय पटसन निगम लिमिटेड
प्रधान कार्यालय, कोलकाता-700087

हमें 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के अवसर पर इस निगम की गृह हिंदी पत्रिका 'पटसन ज्योति' के 7वें अंक समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। आज के इस तकनीकी युग में राजभाषा हिंदी को तकनीक से अलग नहीं रखा जा सकता है। हमें इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल, गुगल आदि में हो रहे राजभाषा हिंदी के प्रयोग की जानकारी करनी होगी। इसलिए भारतीय पटसन निगम लिमिटेड तकनीकी विशेषज्ञों के माध्यम से अपने कार्मिकों को प्रशिक्षित कर रहा है ताकि वे हिंदी में कार्य करने में सक्षम हो सके। इस कड़ी में इस पत्रिका के प्रकाशन में तकनीक का प्रयोग किया गया है, जैसे लेख, कविता आदि को बार कोड एवं ओडियो से जोड़ा गया है ताकि उसका उपयोग कर लेख, कविता आदि सुना जा सकता है।

हम उन सभी कार्मिकों का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना प्रेरणा श्रोत एवं उत्साहवर्धक लेख, कविता आदि दिये हैं।

आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी पाठकों के साथ-साथ हमारे अन्य कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित।

(रमेश कुमार)

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती

2022 में हम न केवल आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं बल्कि एक महान नेता की 125वीं जयंती भी मना रहे हैं।

एक ऐसा नेता जो ना केवल अपनी बहादुरी के लिए जाना जाता है बल्कि ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने के लिए भारत के लोगों के दिलों में एक ज्वाला उत्पन्न करने के लिए भी जाना जाता है। इस प्रख्यात नेता का नाम नेताजी सुभाष चन्द्र बोस है।

'सैन्य आइकन' की भव्य रणनीतिक दृष्टि में ना केवल हमने स्वतंत्रता की प्राप्ति की, बल्कि हमने एक मजबूत और धर्मनिरपेक्ष भारत का निर्माण भी किया।

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक में हुआ था, इसलिए 2022 में इस महान नेता की 125वीं जयंती मनाई जा रही है।

इस वर्ष भारत सरकार ने इंडिया गेट पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की एक भव्य ग्रेनाइट प्रतिमा स्थापित करने का निर्णय लिया है। साथ ही इस वर्ष से 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया जाएगा। यह दिन भारत के लोगों, विशेषकर युवाओं को विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रेरित करेगा। इसका उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना है।

हरि विष्णु
कनिष्ठ सहायक
प्रधान कार्यालय

अड़े रहो

कुमारी सम्पूर्णा प्रियदर्शनी
पुत्री श्री सहदेव बायी
सहायक प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय

अगर जुनून हो सिर पे तेरे
और अंदर में हो विश्वास
फिर ठोकर और ठुकराने का
होगा कहाँ तुम्हें एहसास

मकसद में सच्चाई है तो
सीना ठोक के यही कहो
झुकना होगा दुनिया तुमको
विश्वास पे अपने खड़े रहो
"अड़े रहो, अड़े रहो, अड़े रहो"

दुनिया बदली है जिसने भी
पहले उसको इंकार मिला
अपमानों का हार मिला
और तानों का उपहार मिला

अविश्वास में अब विश्वास भरो
और लहरों के विपरीत बहो
हाथों में विजय मशाल लिए
विश्वास पर अपने खड़े रहो
"अड़े रहो, अड़े रहो, अड़े रहो"

अपने सपने तुम स्वयं चुनो
और बुन लो विश्वास की डोरी से
तुम विजय गर्जना के नायक
तुमको क्या करना लोगों से

तुम स्वयं सिद्ध इस जीवन के
उन्मुक्त गगन में उड़े चलो
आरंभ आज से नवयुग का
विश्वास पर अपने खड़े रहो
"अड़े रहो, अड़े रहो, अड़े रहो"

नैतिक शिक्षा का महत्व

सुभद्रा बायी
पत्नी सहदेव बायी
सहायक प्रबंधक (वित्त)
प्रधान कार्यालय

आचार्य विनोबा भावे अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने विभिन्न धर्मों, मत-मतांतरी के साहित्य का अध्ययन किया था। बड़े-बड़े शिक्षाविद् ज्ञान का लाभ अर्जित करने उनके पास आया करते थे। विनोबा जी संस्कारों को सबसे बड़ी धरोहर मानते थे।

एक बार महाराष्ट्र के किसी विश्वविद्यालय में उन्हें आमंत्रित किया गया। विनोबा जी वहाँ पहुँचे। उन्होंने प्राचार्य से बातचीत के दौरान पूछा, 'विश्वविद्यालय में किस विषय के अध्ययन की व्यवस्था है?'

उन्हें बताया गया कि विभिन्न भाषाओं, गणित, विज्ञान तथा अन्य विषयों का अध्ययन कराया जाता है। विनोबा जी ने पूछा, 'क्या छात्रों को नैतिक शिक्षा देने की भी व्यवस्था है?' उन्हें बताया गया कि ऐसी व्यवस्था नहीं है। विनोबा जी ने पूछा, 'क्या छात्रों की केवल धनार्जन की शिक्षा देना ही पर्याप्त है? क्या उन्हें सच्चा मानव, सच्चा भारतीय बनना आप आवश्यक नहीं समझते?'

यदि छात्रों को अच्छे संस्कार नहीं दिये गए, उन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास नहीं किया गया, तो युवा पीढ़ी अपनी प्रतिभा व शक्ति का राष्ट्र व समाज के हित में ही सदुपयोग करेगी, इसकी क्या गारंटी है?

मेरे विचार में तो सबसे पहले बच्चों व युवक-युवतियों को आदर्श मानव बनने के अच्छे संस्कार दिये जाने चाहिए। संस्कारहीन व्यक्ति तो 'धनपिशाच' बनकर समाज को गलत दिशा में ही ले जाने का कारण बनेगा। विनोबा जी की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में छात्रों को नैतिक शिक्षा दी जाने लगी।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान

रतिमय दास
कंटिजेंट
आर.एल.डी. फारबिसगंज

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का अर्थ है:-

"कन्या शिशु को बचाना और उन्हें शिक्षित करना है।"

यह योजना 22 जनवरी 2015 को लागू की गई थी।

हरियाणा के पानीपत जिले में इसका उद्घाटन किया गया था। क्योंकि उस समय देश में हरियाणा का लिंगानुपात सबसे ख़राब था। प्रति 1000 लड़कों पर केवल 715 ही लड़कियां थी। यह योजना –

स्वास्थ्य मंत्रालय, बाल मंत्रालय परिवार कल्याण मंत्रालय की संयुक्त पहल है।

शुरुआत में इसे 100 जिलों में चयनित करके लागू की गई थी, 87 जिले ऐसे भी थे जिसका लिंगानुपात राष्ट्रीय लिंगानुपात से भी कम था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य – बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना, महिलाओं को सशक्त करना, और बेटियों के प्रति सकारात्मकता का विकास करना है।

इस योजना से बेटियों की भागीदारी हर क्षेत्र में बढ़ी है। लड़कों और लड़कियों के अंतर में काफी सुधार हुआ। आज देश का लिंगानुपात 940 (2011 के जनगणना के अनुसार) है। राज्यों में सबसे ज्यादा केरल में लगभग 1084 और सबसे कम हरियाणा का 879 है।

यह आंकड़े 1951 में 946, 1991 में 933 थे, हमारे देश में लड़कियों की स्थिति को देखकर भारत सरकार द्वारा उनके विकास हेतु अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, जैसे – सुकन्या समृद्धि, बालिका समृद्धि आदि प्रमुख योजनाएं हैं।

अतः भारत सरकार द्वारा इस तरह की योजनाओं से कन्याओं को और अधिक प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

स्वदेशी चाल

त्याग कर विदेशी का मोह
घुमा कर नज़रें देखो एक बार
भरा हुआ है बेशकीमती देश हमारा
अपना लो अपने देश की हर कला।

करो ना तुलना खादी की तुम
चमकते रेशमी विदेशी थानों से
अपना रेशम भी कहीं कम नहीं
बस देखो एक बार खुली आँखों से।

कितनी सुन्दर भारतीय हस्तकला है
विविधता से भरी हर प्रांत की
क्यूँ उसको छोड़ हम हैं भाग रहे
विदेशी वस्तुओं को पाने की होड़ में।

पहचान बनाओ अपने स्वदेश की
दिख जायेगा कितना ऊपर है हमारा देश
जब हट जाएगी काली पट्टी आँखों से
विदेशी चकाचौंध से भरी हुई जो॥

अजय कुमार जॉली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

"हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है।" – धीरेन्द्र वर्मा

सम्मिलित कार्य (टीम वर्क)

एक बार की बात है। एक कछुए और खरगोश के बीच इस बात को लेकर बहस हो गई कि कौन तेज है। उन्होंने एक दौड़ के साथ तर्क को निपटाने का फैसला किया। कछुआ और खरगोश एक मार्ग पर सहमत हुए और दौड़ शुरू कर दी। खरगोश कुछ देर तेज दौड़ता रहा। फिर यह देखकर कि वह कछुए से बहुत आगे है, उसने सोचा कि दौड़ जारी रखने से पहले वह कुछ समय के लिए एक पेड़ के नीचे बैठ जाएगा। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया और जल्द ही सो गया। कछुआ आगे बढ़ा और उसे पछाड़ दिया और जल्द ही दौड़ पूरी कर ली। कछुआ एक निर्विवाद विजेता के रूप में उभरा। खरगोश जाग गया और महसूस किया कि यह दौड़ हार गया है।

कहानी का नैतिक यह है कि धीमा और स्थिर दौड़ जीतता है। यह कहानी का वह संस्करण है जिसके साथ हम सब बड़े हुए है। लेकिन, कहानी का हमारा संस्करण जारी है...

दौड़ हारने से खरगोश निराश हो गया और उसने कुछ सोचा। उसने महसूस किया कि वह केवल इसलिए हार गया था क्योंकि वह अति आत्मविश्वास, लापरवाह और ढीला था। अगर उसने चीजों को हल्के में नहीं लिया होता, तो कछुआ उसे हरा नहीं सकता था। इसलिए उसने कछुए को दूसरी दौड़ के लिए चुनौती दी। कछुआ राजी हो गया।

इस बार खरगोश बिना रुके शुरू से आख़िर तक दौड़ा। वह कई मील से जीता।

कहानी का नैतिक यह है कि तेज और लगातार प्रदर्शन हमेशा धीमे और स्थिर को हरा देगा। धीमा और स्थिर होना अच्छा है; लेकिन तेज और विश्वसनीय होना बेहतर है। लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं होती...

कछुए ने इस बार कुछ सोचा और महसूस किया कि खरगोश को उस दौड़ में हराने का कोई तरीका नहीं है जिस तरह से इसे वर्तमान में स्वरूपित किया गया था। उसने कुछ देर सोचा, फिर खरगोश को दूसरी दौड़ के लिए चुनौती दी, लेकिन थोड़े अलग रास्ते पर। खरगोश राजी हो गया।

कछुआ और खरगोश शुरू हो गए। लगातार तेज होने की अपनी स्व-निर्मित प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए, खरगोश ने उड़ान भरी और तेज गति से भागा जब तक वह एक चौड़ी नदी के पास नहीं आया। फिनिशिंग लाइन नदी के दूसरी तरफ कुछ किलोमीटर थी। खरगोश वहीं बैठा सोच रहा था कि क्या किया जाए। इस बीच, कछुआ चल रहा था, नदी में उतर गया, तैरकर विपरीत किनारे पर चला गया, चलना जारी रखा और दौड़ पूरी की।

कहानी का नैतिक यह है कि पहले अपनी मुख्य योग्यता की पहचान करें और फिर अपनी मुख्य योग्यता के अनुरूप खेल का मैदान बदले।

कहानी अभी खत्म नहीं हुई है...

कछुआ और खरगोश, इस समय तक काफ़ी अच्छे दोस्त बन चुके थे और उन्होंने साथ में कुछ सोचा। दोनों ने महसूस किया कि पिछली रेस को और बेहतर तरीके से दौड़ा जा सकता था।

तो कछुए और खरगोश ने आखिरी दौड़ फिर से करने का फैसला किया, लेकिन इस बार एक टीम के रूप में दौड़ने का फैसला किया।

उन्होंने शुरुआत की और इस बार खरगोश ने कछुए को नदी के किनारे तक ले गया। वहाँ कछुए ने खरगोश को अपनी पीठ पर ले लिया और खरगोश के साथ तैर कर नदी पार हो गया। विपरीत किनारे पर खरगोश ने फिर से कछुए को उठाया और वे एक साथ निर्धारित रेखा पर पहुँच गए। कछुआ और खरगोश दोनों ने पहले की तुलना में अधिक संतुष्टि की भावना महसूस की।

कहानी का नैतिक यह है कि व्यक्तिगत रूप से प्रतिभाशाली होना और मजबूत मुख्य दक्षताओं के लिए अच्छा है, लेकिन जब तक आप एक टीम में काम करने और एक-दूसरे की मुख्य दक्षताओं का उपयोग करने में सक्षम नहीं होते हैं, तो आप हमेशा नीचे के स्तर पर प्रदर्शन करेंगे क्योंकि हमेशा ऐसी स्थितियां होंगी जिनमें आप ख़राब प्रदर्शन करेंगे और कोई और अच्छा करता है।

सम्मिलित कार्य (टीम वर्क) मुख्य रूप से स्थितिजन्य नेतृत्व के बारे में है, जो व्यक्ति को एक स्थिति के लिए प्रासंगिक मुख्य योग्यता के साथ नेतृत्व करने देता है।

बिश्वजीत पाल
सहायक प्रबंधक (मा.सं.)
क्षेत्रीय कार्यालय, बरहमपुर

शिव

ॐ में ही आस्था
ॐ में ही विश्वास
ॐ में ही सारा संसार
ॐ से होती है अच्छे
दिन की शुरुआत।
बोलो ..
ॐ नमः शिवाय!

तरुण देव राय
अतिरिक्त कनिष्ठ निरीक्षक
दुर्गागंज क्रय केंद्र

संकल्प नवभारत का

संकल्प नवभारत का ऐसा हो हिंदी हिंदुस्तान की शान हो।
हम अपनी संस्कृति विरासत का बखान करें, गुणगान करें॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो प्रेम सद्भाव सदा एक-सा हो।
हमलोग रहें यहां मिलजुल कर सभी धर्मों का सम्मान करें॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो आजादी के दीवानों जैसा हो।
गांधी-सुभाष की इस धरती को आबाद रखें खुशहाल रखें॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो भ्रष्टाचार ना जानू कैसा हो।
ईमानदारी बहें रगों में अपनी कर्मठता अपनी पहचान बनें॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो कोई गरीब भूखा ना सो जाएं।
विकास की कड़ी एक ऐसी हो जो आर्थिक समानता ले आएं॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो मिले हर हाथ को रोज़गार।
खत्म हो हर अपराध देश का निडर होकर व्यापार करें॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो विचार प्रबुद्ध के जैसा हो।
हम योग करें और योग्य बनें सभ्य समाज निर्माण करें॥

संकल्प नवभारत का ऐसा हो खेती किसान की आन बनें।
हरियाली हो धरती अपनी फसलों का उचित दाम मिलें।

निरज कुमार
लेखाकार
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

प्रदूषण

आजकल हमारे आस पास प्रदूषण अपना विकराल पैर पसार रहा है। प्रदूषण के कारण आम लोगों का जीवन दूभर हो गया है। प्लास्टिक के कभी खत्म न होने वाले कचरे ने वातावरण में अजीब बीमारी फैला रखी है। कारखानों तथा चिमनियों से निकलने वाले धुऐं ने वातावरण में गैसों की मात्रा पर प्रभाव डाला है, वातावरण में जहरीले धुऐं ने अपनी जगह बना ली है, जो लोगों को अस्पतालों तक पहुँचाने का काम कर रहें है। देशों में हो रहे महायुद्ध जैसे नाभकीय अस्त्रों का प्रदर्शन सम्पूर्ण मानव जाति का विनाश और प्रदूषण का मुख्य कारण भी है। खेतों में अधिक पैदावार के लिए जहरीले रसायनों का छिड़काव भी प्रदूषण की एक गंभीर समस्या है। जो लोगों की बीमारी का एक मुख्य कारण है। प्रदूषण के मुख्य कारण जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा नाभिकीय प्रदूषण है। अतः लोगों को प्रदूषण के खतरे की जानकारी देकर लोगों को जागरूक बनाया जाए तथा सरकार को इस दिशा में सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है।

नितिन नारायण राय
अतिरिक्त कनिष्ठ निरीक्षक
गुलाबबाग डी.पी.सी.

असम की संस्कृति और परंपरा

अनिक कुमार दे
आंचलिक प्रबंधक (उत्तर पूर्वी)
आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

असम – इस शब्द का उल्लेख ही इस क्षेत्र में रहने वाली असंख्य जातीय, जनजतियों और उप-जनजातियों की संस्कृति, विरासत, विश्वासों और विश्वासों का रमणीय मिश्रण है। राज्य की संस्कृति और परंपरा इसकी संगीत, नृत्य और साहित्य सभी सामाजिक ताने-बाने में गुथे हुए है और जाति, पंथ और धर्म की सभी बाधाओं को पार करते हैं। वास्तव में, राज्य की समृद्ध परंपरा का उल्लेख, विविध जीवन शैली, कला-शिल्प, मेले और वहां रहने वाले लोगों के त्योहारों का उल्लेख किए बिना अधूरा होगा।

असम में बड़ी संख्या में जनजातियां हैं जिनमें से प्रत्येक अपनी परंपरा, संस्कृति, पहनावे और जीवन-शैली में अद्वितीय है। बोडो, कचारी, कार्बी, मिरी, मिशिमी, राभा आदि जैसी विविध जनजातियाँ असम में सह-अस्तित्व में हैं; अधिकांश जनजातियों की अपनी भाषाएँ हैं, हालाँकि असमिया राज्य की प्रमुख भाषा है।

इन सभी जातीय, जनजातियों का पहनावा, भाषा, त्योहार, परंपरा और विरासत का अपना अलग पैटर्न है। इस तरह की विविधताओं के बावजूद यहां के लोग पूर्ण शांति और सद्भाव से रहते है – एक अनोखी विशेषता जो दुनिया के इस हिस्से में ही देखी जाती है।

असम की विविध संस्कृति को विभिन्न युगों में इस क्षेत्र में रहने वाले विभिन्न राजवंशों और साम्राज्यों के प्रभाव के लिए भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। असम के भीतर विभिन्न जातीय समुदायों द्वारा लगभग 55 विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं। हालाँकि, राज्य की प्रमुख भाषा असमिया है, जिसे पूरे पूर्वोत्तर भारत की भाषा के रूप में माना जाता है। असम में प्रमुख त्योहार बिहू है, जो सभी जाति और पंथ के द्वारा मनाया जाता है। राज्य के भीतर धूमधाम और भव्यता के साथ मनाए जाने वाले कुछ अन्य त्योहार हैं – राभास के बैखू और फरकांतिस, बोडो जनजाति की खेराई पूजा, मिशिंग जनजाति के अली-ऐ-लिगंग और पराग और मे-दम-मे-फी, जिसका अर्थ है, पूर्वजों की पूजा अहोमों का त्योहार।

इतिहास : असम राज्य का एक समृद्ध और प्राचीन इतिहास है जिसकी नींव वैदिक और तांत्रिक साहित्य, असमिया लोककथाओं और बौद्ध साहित्य में पाई जा सकती है। राज्य में इंडो-आर्यन, ताई-कडाई, ऑस्ट्रो-एशियाटिक और तिब्बती-बर्मन मूल के लोगों का संगम रहा है और इससे वर्तमान में संस्कृति और परंपरा का मिश्रण मौजूद है।

लोग : जनगणना रिपोर्ट के अनुसार असम की कुल जनसंख्या लगभग 34,586.234 है जो भारत की जनसंख्या का लगभग 2.59% है। राज्य में रहने वाले बड़ी संख्या में लोग एक बहु-जातिय और बहु-धार्मिक समाज में रहते है और तीन प्रमुख समूहों से संबंधित भाषाएं बोलते हैं: ऑस्ट्रो-एशियाई, तिब्बाती, बर्मन और इंडो-आर्यन। असम को अक्सर बड़ी संख्या में जातीय जनजातियों और नस्लों को पिघलने वाले बर्तन के रूप में माना जाता है. जो सद्भाव और शांति के वातावरण में एक साथ रहते हैं।

धर्म : धर्म किसी भी समुदाय या समाज का एक अभिन्न अंग है जो उसके विकास के लिए आवश्यक है। इसे अक्सर एक पूर्ण और सुखी जीवन जीने के लिए एक संगठित दृष्टिकोण के रूप में माना जाता है। असम के धार्मिक समुदाय में मुख्य रूप से हिंदू धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, सिख धर्म और बौद्ध धर्म शामिल हैं। इसके अलावा विभिन्न स्वदेशी समूह भी जीववाद, तांत्रिकवाद, ब्राह्मणवाद और वैष्णववाद का पालन करते हैं। अपने धार्मिक विश्वासों में इतने बड़े अंतर के बावजूद, राज्य के सभी लोग एक-दूसरे के साथ पूर्ण शांति और सद्भाव में रहते हैं।

"भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिंदी की देन बड़ी महत्त्वपूर्ण है।" – सम्पूर्णानन्द

सेख तेसिक अली
कनिष्ठ निरीक्षक
त्रिमोहिनी डी.पी.सी.

थोड़ा बेहतर महसूस करें

क्या आपको याद है कि बचपन में जब आपने पहली बार साइकिल चलाना सिखा तो कैसा लगा था या पहली बार तैराकी का अनुभव? स्कूल की किताब में वह पहला बहुत अच्छा है या पहले खाना पकाने के बाद आपके हाथों की भावना? मुझे लगता है कि हर किसी को कुछ न कुछ याद रहता है। तुम जानते हो क्यों? क्योंकि हमारी खुशी और शांति वास्तव में छोटी-छोटी चीजों में निहित है – जिन चीजों को हम नजरंदाज करते हैं, उन पर ध्यान नहीं जाता, कई लोग आरामदायक बिस्तर पर नहीं सो सकते हैं, बैंक खाता भरा हुआ हो तो भी दिल खाली लगता है, सबके बीच में भी आपको अकेलापन महसूस हो सकता है। यदि ऐसा है तो हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमारी शांति वास्तव में हमारे प्रियजनों के साथ हमारे संबंधों, छोटी-छोटी उपलब्धियों और स्वयं के साथ हमारी समझ जुड़ी है, लेकिन आसमान में तारों को देखते हुए बगीचे में लगे फूल को मत भूलना, इसलिए हम कहते है – “यह जीवन में सबसे सरल चीजें हैं जो सबसे अधिक आनंद लाती है” और कुछ नहीं।

वृक्ष की महिमा

पुरुषोत्तम हरि
सहायक प्रबंधक (परि./विप.)
क्षेत्रीय कार्यालय, बरहमपुर

वृक्ष की महिमा कोई-कोई जाने, यह बात पुरानी है।
इसकी हिफाज़त कौन करें, इसकी ना हैरानी है॥
आओ आज सुनाएं कहानी, वृक्ष ही ऐसा प्राणी है।
माता-पिता से बढ़कर ये तो, सृष्टि की अजब निशानी है॥
माता-पिता है जीवन दाता, वृक्ष हमारे भाग्य विधाता।
है जीवन रक्षक वृक्ष हमारे, हम तक यही ऑक्सीजन पहुँचाता॥
वृक्ष हमें औषधि देकर, स्वास्थ्य लाभ उपलब्ध कराता।
हमारी जरूरत सहर्ष ही, वृक्षों से ही पूरा होता॥
घने ऊँचे वृक्षों ने तो पर्वत से हैं हाथ मिलाता।
वर्षा लाकर जीवन में, खुशहाली की शान बढ़ाता॥
पक्षियों के घर-आँगन, इसी वृक्ष पर है रहता।
जो हम मानव के जीवन में, हौसला को बढ़ाता है॥
वृक्ष हमें छाँव भी देते और धरती को हरियाली।
इसी वृक्ष के नीचे तो, सिद्धार्थ को है ज्ञान मिला॥
इसी वृक्ष से न्यूटन को, एक अनोखा पहचान मिला।
इसी वृक्षों से ही तो, कालिदास भी मूर्ख से विद्वान बना॥
इसी वृक्ष से संजीवनी लेकर, लक्ष्मण को जीवनदान मिला।
इसी वृक्ष के कारण तो, बादल का अवतार हुआ॥
वसंत प्रश्तु के वृक्ष हमको, उम्मीद की किरण जगाते हैं।
जैसे पतझड़ में नई पत्तियाँ स्वतः ही आ जाते हैं॥
अब भी कुछ शर्म करो इंसान, वृक्ष काटना नहीं जरूरी है।
हर शुभ मौके पर तो, वृक्ष लगाना जरूरी है॥

"हिंदी के पुराने साहित्य का पुनरुद्धार प्रत्येक साहित्यिक का पुनीत कर्तव्य है।"" – पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

जीवन में सफलता के लिए आत्मविश्वास उतना ही आवश्यक है, जितना मानव के लिए ऑक्सीजन और मछली के लिए पानी। आत्मविश्वास में वह शक्ति है, जिसके माध्यम से हम कुछ भी कर सकते हैं। बिना इसके व्यक्ति सफलता की डगर पर कदम नहीं बढ़ा सकता। यह एक ऊर्जा की तरह है जो सफलता की राह में आनी वाली कठिनाइयों और परेशानियों से मुकाबला करने के लिए व्यक्ति को साहस प्रदान करती है और परिणामस्वरूप आपका मन मजबूत और खुश रहता है। यह आपकी शक्ति और उन चीजों को करने की क्षमता को बढ़ाता है, जो आपको भयभीत कर सकते है। मन यदि सधा हुआ है तो आप जग जीत सकते है और यदि मन नियंत्रण में ना हो तो जीती हुई बाजी भी हार सकते है। इसीलिए कहा गया है – "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत"

आत्मविश्वास के लिए हमारी सोच का सकारात्मक होना बेहद आवश्यक है क्योंकि सकारात्मक सोच अगर हमारे अंदर नहीं होगी तो आत्मविश्वास तो दूर की बात उसकी झलक भी हमारे अंदर नज़र नहीं आएगी। जिस कारण हम अपनी सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाएँगे। साथ ही आस-पास के लोग आप पर हावी होगें और आप फिर से उठने में सक्षम नहीं होगें। इसलिए जीवन में खुश रहने और सफलता पाने के लिए आत्मविश्वास जरूरी है। अतः अपने ऊपर विश्वास रखकर ही आप दुनिया में बड़े से बड़ा कार्य सहज ही कर सकते हैं। दुनिया में भगवान ने हर किसी को अनंत शक्तियाँ प्रदान की हैं, हर किसी में कोई ना कोई खास बात होती है। बस जरूरत है अपने अंदर की उस खास शक्ति को पहुंचाने की, उसे निखारने की। जो काम दूसरे लोग कर सकते हैं, वह काम आप क्यों नहीं कर सकते हैं? अपने आप पर भरोसा कीजिए फिर दुनिया भी आप पर भरोसा करेगी। जीवन में हमारे पास कुछ हो या ना हो, लेकिन यदि आत्मविश्वास होगा तो हम कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। अब्राह्म लिंकन ने अथक प्रयास कर दासों को मालिकों के शिकंजे से मुक्त कराया। इसी आत्मविश्वास ने कोलंबस को अमेरिका की खोज में सहयोग दिया। नेपोलियन ने इसी शक्ति से ओत-प्रोत होकर अपने सेनापति से कहा था यदि आल्पस पर्वत हमारा मार्ग रोकता है तो वह नहीं रहेगा और सच में उसे काट कर रास्ता बना लिया था। मधुमक्खी कण-कण से ही शहद जमा करती है, उसे कहीं से इसका भंडार नहीं मिलता है। उसके छत्ते में भरा शहद उसके आत्मविश्वास और लगन का ही परिणाम है।

आत्मविश्वास मनुष्य के अंदर समाहित होता है। आपको इसे कहीं और से लाने की जरूरत नहीं। यह आपके अंदर ही है, बस जरूरत है अपने अंदर की आंतरिक शक्तियों को जोड़ने की और आत्मविश्वास को मजबूत करने की। प्रत्येक व्यक्ति के अंदर कोई न कोई गुण अवश्य मौजूद होता है। लेकिन वह अपने आत्मविश्वास के अभाव के कारण उसे प्रदर्शित नहीं कर पाते। इसीलिए अपने आत्मविश्वास के साथ अपने गुणों को भी प्रकट करें। आप जो भी कार्य करे उस पर आपको पूर्ण विश्वास और सकारात्मक सोच होनी चाहिए कि वह सही है और सफलता की ओर बढ़ रहे है।

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत, कहे कबीर हरि पाइए मन ही की परतीत" – अर्थात् जीवन में जय और पराजय केवल मन के भाव हैं।

मनीष श्रीवास्तव
सहायक प्रबंधक (मा.सं)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

विष्णु प्रसाद डेका
कनिष्ठ निरीक्षक
भूरागांव ड़ी.पी.सी.

भारत का स्वतंत्रता दिवस

मैं हिन्द हूँ, तू मुस्लिम है,
है दोनों इंसान,
ला मैं तेरी गीता पढ़ लूँ, तू पढ़ ले कुरान,
इस स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर,
है मेरा बस एक ही अरमान,
"एक थाली में खाना खाये
सारा हिंदुस्तान।

15 अगस्त 1947 को हमारा देश ब्रिटिश शासन से मुक्त होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र बना था। 14 और 15 की मध्य रात्रि को कई विद्रोह के बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी, हमें स्वतंत्र हुए आज पूरे 75 वर्ष हो गया हैं। हमारा भारत 200 वर्ष तक अंग्रेजों के अधीन था। हमारे देश में आज़ादी के लिए लड़ाई लड़ी गयी, जिसमें बहुत से महापुरुषों ने अपना बलिदान दिया और भारत को एक स्वतंत्र देश बनाया, इस वर्ष हम स्वतंत्र दिवस की 75वीं वर्षगांठ मना रहें है।

स्वतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में पूरा देश पूरे हर्ष और उल्लास के साथ इस दिन की राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाते है और स्कूल, कॉलेज और भारत के सभी संस्थानों में तिरंगा फहराया जाता है, लेकिन इस साल भारत सरकार ने कहा कि देश में घर-घर में तिरंगा फहराया जाना चाहिए। इस दिन बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते है और हास्य, नाटक, भाषण, नृत्य जैसे कार्यक्रम आयोजित करते हैं एवं सरकार द्वारा राष्ट्रीय सम्मान दिया जाता हैं।

आइए स्वतंत्रता दिवस के इस शुभ दिन पर हम सभी मिलकर राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने का प्रण लेते हैं। कुछ लाइनों के साथ अपनी बात को समाप्त करता हूँ —

आज़ादी की कभी शाम नहीं होने देंगे
शहीदों की कुर्बानी बदनाम नहीं होने देंगे,,
बचा हो जो एक बूँद भी गरम लहू को
तब तक भारत माता का आँचल नीलाम नहीं होने देंगे,,

जय हिन्द! — जय भारत माता —

पिता

पिता रोटी है कपड़ा है मकान है
पिता नन्हें से परिंदे का बड़ा आसमान है
पिता है तो घर में प्रतिपल राग है
पिता से ही माँ की बिंदी चूड़ी सुहाग है
पिता है तो बच्चे के सारे सपने है
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने है।
पिता दुनिया दिखाने का एहसास है
पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर हाथ है
पिता पालन है, पोषण है,
परिवार का अनुशासन है
पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है।

कृष्णा दास
कंटिंजेंट
बुलबुलचंडी डी.पी.सी.

खुश रहो

छोटी-सी है जिंदगी
हर बात में खुश रहो...
जो चेहरा पास न हो
उसकी आवाज में खुश रहो...
कोई रूठा हो आपसे,
उसके अंदाज में खुश रहो...
जो लौट के नहीं आने वाले,
उनकी याद में खुश रहो...
कल किसने देखा है...
अपने आज में खुश रहो...

नबजित दास
अतिरिक्त कनिष्ठ निरीक्षक
पातीलादहा डी.पी.सी.

"हिन्दी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।" – मौलाना हसरत मोहानी

युद्ध तो नहीं हो रहा - फौजी करते क्या हैं?

चंद्रकांत चौधरी
उप प्रबंधक(मानव संसाधन)
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

मैं एक फौजी हूं। जब मैं डिफेन्स में शामिल हुआ तो मेरे दोस्त और मेरे परिवार के सभी सदस्य बहुत खुश थे कि मेरी नौकरी लग गयी। लेकिन मेरी प्रेरणा डिफेन्स की वर्दी थी। मैं छोटी उम्र में नौसेना में शामिल हो गया और बहुत उत्साहित था। ट्रेनिंग छह महीने की थी और काफी कठिन थी, लेकिन प्रेरणा जुनून में बदल गई थी। प्रशिक्षण मॉड्यूल इतना सुव्यवस्थित था कि एक सामान्य व्यक्ति देशभक्त में बदल रहा था और यह बिल्कुल ही सामान्य तरीके से हो रहा था। मैंने सोचा, कठिन प्रशिक्षण सिर्फ छह महीने के लिए होगा और ट्रेनिंग के बाद मुझे पक्का कुछ न कुछ जिम्मेदारी दी जाएगी। पासिंग आउट परेड हुई, मैं स्थायी रूप से नौसेना में शामिल हो गया, मैंने सोचा अब यहीं से मेरी यात्रा की शुरुआत होगी। लेकिन फिर मुझे एक और नौ महीने की विशेषज्ञता ट्रेनिंग के लिए भेज दिया गया। इस बार की ट्रेनिंग पिछली ट्रेनिंग से भी ज्यादा कठिन थी। मुझे और मेरे साथियों को पूरा यकीन हो चला था कि इस ट्रेनिंग के बाद हमें निश्चित रुप से कोई न कोई जिम्मेदारी दी जाएगी। ट्रेनिंग के दौरान हम केवल ट्रेनिंग ही नहीं कर रहे थे बल्कि हम सभी एक-दूसरे के साथ कभी न मिटने वाली रिश्ते भी बना रहे थे। अब मैं कोर में विशेषज्ञ हो चुका था, मैं अपने जुनून को लेकर और भी अधिक उत्साहित था। मुझे एक डिफेन्स इस्टैब्लिशमेंट में नियुक्ति मिली और नई जगह पर कार्यभार ग्रहण करने पर मैंने पाया कि यहाँ का दिनचर्या ऊपर के दोनों प्रशिक्षण मॉड्यूल का समामेलन है... सुबह की पीटी, नाश्ता, परेड, फायरिंग अभ्यास, कोर से संबंधित कार्य और सिक्योरिटी ड्यूटी आदि। हालाँकि, इस बार मेरे लिए यह कठिन दिनचर्या बहुत ही आसान था, आसान इसलिए नहीं कि मुझे कुछ आराम मिला बल्कि इसलिए कि मैं ऐसी दिनचर्या का अभ्यस्त हो गया था। मेरे पूरे रक्षा कार्यकाल में रविवार बेहतर रहा, क्योंकि हर रविवार को केवल कभी 21 किलोमीटर या कभी फुल मैराथन (42 किलोमीटर) की दौर होती थी और फिर आराम होता था। अब, मैं परिभाषित

जिम्मेदारियों की तलाश नहीं कर रहा था, मुझे समझ आ गया था कि अनुशासित रहना, शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना और मानसिक रूप से मजबूत रहना ही मेरी जिम्मेदारी है। जैसे एक कहावत है, “दि मोर यू स्वेट इन पीस, दि लेस यू ब्लीड इन वार” हाँ, एक और बात फ़ौज में दीवार पे लिखे कहावतों की लाइने "पौधे लगाओ पर्यावरण बचाओ" जैसे नहीं होती है, यहाँ तो जोश भर देने वाले कहावत होते हैं, जैसे “हिट फर्स्ट, हिट हार्ड एंड कीप ऑन हिटिंग”.... “वन फॉर आल-आल फॉर वन”.....”यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि वह मौत से नहीं डरता तो समझ जाइए वह या तो झूठ बोल रहा है या वह गोरखा है”, “एक सोल्जर हमेशा के लिए सोल्जर रहता है”, आदि-आदि।

जैसा मैंने बताया, मैं अपनी जिम्मेदारियों को समझ चुका था और यह भी समझ गया था कि मैं हर दिन युद्ध का प्रैक्टिकल करता हूँ और युद्ध क्षेत्र में केवल प्रैक्टिकल ही काम आएगा वहां कोई थ्योरी नहीं चलेगा।

मैं डिफेन्स सर्विसेस की अनिवार्यता, इसकी ज़रुरत और इसकी कार्यशैली के बारे में चर्चा नहीं करना चाहूँगा। लेकिन मैं देखता हूँ कि मेरे कुछ असैनिक दोस्त मुझसे पूछते है कि जंग तो हुई नहीं है तो तुम फौजी करते क्या हो, तुम तो बिना मतलब के पेंशन ले रहे हो। अगर एक फौजी को री-एम्प्लॉयमेंट मिल जाती है तो कुछ एचआर वाले कहते हैं कि इनको तो दो-दो सैलरी मिलती है। मैं कहना चाहूँगा कि हम सभी देश और उसके विकास के लिए काम कर रहे हैं, कुछ प्रत्यक्ष रूप से योगदान दे रहे हैं तो कुछ अप्रत्यक्ष रूप से। लेकिन फौजी हमेशा सर्वोच्च बलिदान के लिए तैयार रहता है। युद्ध लड़ना हर सैनिक का एक सपना होता है। लेकिन अगर कोई कहता है कि वॉर तो हो नहीं रहा, फौजी करते क्या हैं तो दिल में बहुत चुभता है। मैंने अपना आपबीती को थोड़ा मनोरंजक बनाने की कोशिश की... फिर भी अगर मैंने किसी की भावना को ठेस पहुँचाई हो तो मैं माफ़ी मांगता हूँ। धन्यवाद!

आजादी का अमृत महोत्सव

आजादी का 75वां वर्ष गाँठ आया है
बलिदानियों को फिर याद दिलाया है।
खुशियाली भरा त्योहार आया है,
भगत, बिस्मिल, बोस जैसे सपूतों का याद दिलाया है।
तिरंगा का यह अमृत त्योहार आया है,
जलियावाला बाग का खूनी याद दिलाया है।
डायमंड जुबली मनाने का उत्सव आया है,
पर अमृत आजादी का खूनी याद दिलाया है।
स्वतंत्रता का अविस्मरणीय उत्सव आया है,
पर सुनी गोदों, उजड़ी माँगों का याद दिलाया है।
स्वतंत्रता का अनमोल पर्व आया है,
विविधता में एकता का संदेश लाया है।
यों स्वतंत्रता का उत्सव तो हर वर्ष आता है,
पर इस वर्ष यह डायमंड जुबली बन कर आया है।
जब यह उत्सव इतना खास बनकर आया है,
तो हर घर तिरंगा लहराकर इसे यादगार बनाना है।
स्वतंत्रता का यह उत्सव घर-घर मनाना है,
और बलिदानियों के सपने को साकार बनाना है।
शांति एवं प्रगति का प्रतीक तिरंगा हर घर लहराना है,
जियो और जीने दो का प्रतीक इस उत्सव को यादगार बनाना है।

शंभू प्र० सिंह
सहायक विपणन प्रबंधक-II
गुलामबाग डी.पी.सी.

भारत का सुनहरा रेशा : जूट

कहीं पटवा, कहीं पटसन तो कहीं जूट कहलाती है।
हरा रंग हरी हमारी धरती की हरियाली है॥
वातावरण जो स्वच्छ रखें ये ऐसी उजियारी है।
एक डोर में बांध रही ये देश की खुशहाली है॥

कहीं पटवा कहीं पटसन तो कहीं जूट कहलाती है।
उपयोग न जाने क्या कहूं ये श्रृंगार हमारी है॥
खग से खरगोश को रखें ये ऐसी फुलवारी है।
बैग-बोरे, रस्सियां व दरियाँ ये व्यापार हमारी है॥

कहीं पटवा कहीं पटसन तो कहीं जूट कहलाती हैं।
दीवाली में इसकी लकड़ी पवित्र मानी जाती है॥
दिल से दिल्ली तक चर्चा ये तकदीर हमारी है।
हल वाले हलधर की ये आश जगाने वाली है॥

अनीता देवी
माताजी: नीरज कुमार लेखाकर
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

मसाई मारा नेशनल रिजर्व

सौम्यदीप घोष
उप प्रबंधक (सू.प्रौ.)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

मसाई मारा पूरे अफ्रीका में सबसे प्रसिद्ध रिजर्वों में से एक है। यह अपने असाधारण वन्य जीवन के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। मसाई मारा अफ्रीका के कुल भूभाग के केवल 0.01% में बसा हुआ है। इसके बावजूद अफ्रीका के 40% से अधिक स्तनधारी यहां पाए जा सकते हैं। मारा के विशाल मैदानों में पर्यटकगण शेर, चीता, तेंदुआ, हाथी और अन्य प्रजातियों की एक अनंत विविधता को देखते हैं।

परिदृश्य : मसाई मारा में केन्याई वन्यजीवों के बचे हुए हिस्से का लगभग 25% शामिल है। अनुमानुसार केन्या के लगभग 70% वन्यजीव राष्ट्रीय उद्यानों और रिजर्वों से बाहर रहते हैं। इस प्रकार निजी भूमि पर मारा वन्यजीवों को संरक्षित करने वाले नए रोल मॉडल की आवश्यकता सर्वोपरि है। नाबोइशो आज वह भूमिका निभा रहा है। अफ्रीका ने विगत सौ वर्षों में अपने सबसे प्रतिष्ठित स्तनधारियों में से लगभग 95-98% हाथियों, गैंडों, शेरों और चीता को खो दिया है। WWF का अनुमान है कि अगले 50 साल में दुनिया अपनी 2/3 कशेरुकाओं को खो देगी। दुनिया के लगभग 70% वन्यजीव तनाव में है। आवास का नुकसान इस विनाश का मुख्य कारण है।

अवस्थित : मसाई मारा ग्रेट रिफ्ट वैली में स्थित है जो केन्या, तंजानिया, मलावी और मोज़ाम्बिक में इथियोपिया के लाल सागर से लगभग 3,500 मील (5,600 किमी) लंबी फोल्ट लाइन है। यहां घाटी चौड़ी है और दूर से धुंधली रूप में एक विशाल ढलान देखा जा सकता है। जानवरों को पार्क के बाहर फैलाव वाले क्षेत्रों में जाने की स्वतंत्रता है। पार्क के बाहर जितने वन्यजीव घूम सकते हैं, उतने अंदर भी हो सकते हैं। कई मसाई गांव फैलाव वाले क्षेत्रों में स्थित हैं और सदियों से उन्होंने वन्यजीवों के साथ सहक्रियात्मक संबंध विकसित किया है।

मारा में चार मुख्य प्रकार के इलाके हैं – पूर्व में नगामा हिल्स रेतीली मिट्टी और पत्तेदार झाड़ियां, आलूलोलो एस्करपमेंट पश्चिमी

"समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" – जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

सीमा का निर्माण करता है और एक शानदार पठार की ओर बढ़ता है। मारा नदी के किनारे हरा-भरा घास के मैदान और बबूल के जंगल के साथ मारा ट्राएंगल जो खेल के बड़े पैमाने का समर्थन करते हैं, विशेष रूप से वन्यजीवों का प्रवास और मध्य मैदान, मैदानी खेल के पक्ष में घास के मैदानों पर बिखरी हुई झाड़ियों और बोल्डर के साथ रिजर्व का सबसे बड़ा हिस्सा बनाते हैं।

वन्य जीवन और प्रवास : मारा महान प्रवासन के लिए जाना जाता है जो हर साल जुलाई से सितंबर तक होता है। इन महीनों के दौरान पीले सवाना को 1.5 मिलियन से अधिक वन्यजीव, ज़ेब्रा और मृगों द्वारा काला कर दिया जाता है जो भोजन और पानी की तलाश में सेरेंगेटी से मारा की ओर पलायन करते हैं।

मारा और सेरेंगेटी पार्क अन्योन्याश्रित वन्यजीव आश्रय स्थल हैं। यहीं पर दुनिया का सबसे बड़ा बहु-प्रजाति प्रवास होता है। तंजानिया में शुष्क अवधि के दौरान सेरेंगेटी से मसाई मारा में पलायन करने वाले वन्यजीवों के आसपास केंद्रित है जो उनके रास्ते में शक्तिशाली मारा नदी को पार करते हैं। ग्रेट वाइल्डबेस्ट माइग्रेशन प्राकृतिक दुनिया के सबसे आश्चर्यजनक नजारे में से एक होने का सही हकदार है। 1.5 मिलियन से अधिक वन्यजीव, ज़ेबरा और मृग मिलकर महान प्रवासन ग्रह पर अंतिम जीवित बहु-प्रजाति प्रवास का गठन करता है।

अधिक प्रवास का मौसम : जुलाई के अंत से लाखों नए भूरे और काले आगंतुक डॉक्स मसाई मारा नेशनल रिजर्व के विशाल मैदानों में बिखर जाते हैं, जिससे दुनिया के यह प्राकृतिक आश्चर्य और भी अधिक चमत्कारिक बन जाता है जब तक कि वे दिसंबर में वापस नहीं हो जाते। वन्यजीवों का जीवन चक्र सभी जीवित प्राणियों के जीवन चक्र का एक स्नैपशॉट है। वन्यजीव अपना जीवन भटकते हुए बिताते हैं, दक्षिण में सेरेंगेटी से उत्तर में मसाई मारा के बीच बिना थके ट्रेकिंग करते हैं।

एक वन्यजीव के जीवन का प्रत्येक क्रम धरती माता के नियमानुसार होता है। उनके प्रवासी मार्ग बारिश के पैटर्न से निर्धारित होते हैं, वे पानी और ताजी घास की निरंतर खोज में भटकते रहते हैं। इसी तरह, उनकी ब्यांत होने की प्रवृत्ति चंद्रमा की गति के साथ समयबद्ध होती है, जिसके परिणामस्वरूप फरवरी में सेरेंगेटी मैदानी इलाकों में तीन सप्ताह तक चलने वाला जन्म उत्सव होता है।

वन्यजीवों का आना और जाना कई अन्य प्रजातियों के जीवन को भी आकार देता है। मसाई मारा के शिकारियों के लिए जंगली जानवरों का आगमन दावत और समृद्धि के समय की शुरुआत का प्रतीक है। बड़ी बिल्लियाँ, विशेष रूप से प्रवास के मौसम में पनपती हैं। उपलब्ध शिकार की प्रचुरता का मतलब है कि शेर, चीता और तेंदुए मजबूत होने और स्वस्थ संतान पैदा करने में सक्षम हैं।

"वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठाक प्रतिनिधित्व कर सके और हिन्दी इसमें समर्थ है।" – पीर मुहम्मद मुनिस

अयोध्या पहाड़ का भ्रमण

सौमेन कुंडु
उप प्रबंधक(परि./विप.)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

पुरुलिया पश्चिम बंगाल की पश्चिमी सीमा पर उन स्थानों में से एक है, जो हरियाली के बीच स्थित है एवं झरनों और प्राकृतिक वन्य जीवन से घिरा हुआ है। मेरा जन्म स्थल भी पुरुलिया है। अब मुझे फिर से अपने बचपन के दिन याद आ गए। इस बार सोचा कि अयोध्या पहाड़ का दर्शन किया जाए। राम के वनवास के मार्ग के बारे में देश में कई किंवदंतियाँ हैं। यहां के ग्रामीणों का मानना है कि वनवास के समय श्रीराम सीता माता के साथ यहां से गुजरे थे। जब सीता जी को यहां से गुज़रते हुए प्यास लगी तो राम जी ने चट्टानों पर बाण चलाए और जमीन से एक जल स्रोत निकाला, जिसे आज सीता कुंड के नाम से जाना जाता है। राम के वनवास की इसी कथा के कारण इस पहाड़ का नाम अयोध्या पहाड़ हुआ।

हमने अयोध्या पहाड़ के दर्शन करने के लिए अपना यात्रा प्रारंभ किया। खुशी का पहला पल झलदा की ओर बढ़ते ही आया। सड़क के दायीं ओर रेल की पटरियां, वहीं दूसरी ओर हरी-भरी पहाड़ियों का प्राकृतिक सौंदर्य लुभावनी थी। चाय पीने की इच्छा सह-यात्रियों को परेशान कर रही थी, लेकिन इतनी भीड़ में कार पार्क करना ट्रैफिक जाम को आमंत्रित करना था। इसलिए हम आगे बढ़ गए और नगर से बाहर आ गए। अयोध्या पहाड़ की एक सड़क टाउन स्क्वायर से मुड़ती है, लेकिन हमने उस मार्ग को चुना जो जंगलों से गुजरते हुए मुर्गुमा बांध जाता है। मैंने झालदा को पार कर एक छोटे से ढावे पर चाय के बर्तन को देखकर कार रोक दी। जो मजा पांच रुपये के एक गिलास चाय में आया, वह एक-दो सौ रुपये के कैपुचीनो में भी नहीं मिलता।

वहां कुछ देर आराम करने के बाद हम मुर्गुमा बांध की ओर चल पड़े। इस बरसात के मौसम में बांध में पानी उतना नहीं था, जितना कि उम्मीद था। मैं बांध के किनारे चला गया। बांध से सिंचाई के लिए नहर निकाली गई है। कुछ पक्षियों की चहचहाहट सुनाई दी। थोड़े दूर पर सड़क के पीछे के जंगल से ठंडी हवा बहती हुई नीचे की झाड़ियों में गायब हो गई। तभी मेरी नजर पानी के बीच में बैठे पक्षियों पर पड़ी। पक्षियां पत्थर पर इधर-उधर फुदक रही थी, अपने पंखों को बड़े चाव से सूखा रही थी। मुर्गुमा बांध से आगे बढ़ते ही चढ़ाई शुरू हो जाती है। जंगलों के बीच में एक ऐसा कोना मिला जहां से पूरा बांध दिखाई देता है। सड़क बहुत ही सुंदर था। सड़क के दोनों ओर झाड़ियों और पेड़ों का साम्राज्य था। आसमान रंग-बिरंगा था... एक तरफ सूरज ढल रहा था और दूसरी तरफ पहाड़ियां अनुपम रंग-बिरंगों में बदल रही थीं। इतनी ख़ूबसूरत सड़क का मजा सिर्फ पैदल ही लिया जा सकता था। दिन के सबसे ख़ूबसूरत पलों में से एक इन पहाड़ी ढलानों पर चलना था, कभी धूप में, कभी छांव में। जंगलों के बीच छोटे-छोटे गांव आते रहे। अधिकांश घर फूस के थे, जबकि कुछ की छतें पक्की की थीं।

अयोध्या पहाड़ का नगर क्षेत्र बहुत छोटा है। पश्चिम बंगाल पर्यटन के गेस्ट हाउस 'निहारिका' के अलावा यहां दस-बारह छोटे-बड़े लॉज, होटल और गेस्ट हाउस हैं। हम रिजर्वेशन कराकर नहीं गए थे। घूमते-घूमते एक लॉज मिला जहां एक ही कमरा खाली था। खाने के लिए सड़क के किनारे एक ढाबा था। शाम होने में अभी दो घंटे बाकी थे। लॉज से मयूर पहाड़ दिखाई दिया। सबसे पहले मयूर पहाड़ पर चढ़ने का निर्णय लिया गया। पहाड़ बहुत ऊंचा नहीं था। पहाड़ के चोटी पर एक छोटा-सा हनुमान मंदिर है, जहां से आप घाटी में फैले जंगलों और खेत-खलिहानों के विशाल विस्तार को देख सकते हैं। मयूर पहाड़ के बाद हमारा अगला पड़ाव था मार्बल लेक। लेक की ओर जाने वाला मार्ग गड्ढों से भरा था। जिस बारिश के लिए हमने दिन में दुआ की थी, हो सकता है कि यहां बारिश हुई हों। धान के खेत पानी से भरे हुए थे। नालों से बहता पानी जगह-जगह पर सड़कों को गड्ढा कर दिया था। एक दो गड्ढों को पार करते समय कार में सवार सभी लोग राम के नाम का जाप करने लगे थे।

मार्बल लेक को देखने के बाद हमें समझ में आया कि ऐसा नाम क्यों पड़ा। संभवत: लेक के निर्माण के समय यहां से निकाले गए पत्थर को इसके चारों ओर रख दिया गया था। लेक के एक ओर पठार तो दूसरी ओर हरियाली लेक की सुंदरता को एक नया रूप दे रही थी। मार्बल लेक की संरचना ऐसी है कि यहां का प्रतिध्वनि बहुत जोर से गुंजता है। किसी का नाम ज़ोर से लेने पर उस आवाज़ की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ता है। मेरे नाम को आकाशवाणी की तरह गूँजता देख मेरे और मेरे दोस्तों के होश उड़ गए। सबका दिल खिल उठा और सबने बारी-बारी से अपने नाम का आवाज लगाई। सूर्य देव से विदा लेकर हम उसी रास्ते से वापस लौटे। लौटते समय शाम की चाय का स्वाद चखते हुए विश्राम के लिए अपने लॉज में पहुँच गए।

बन्टी का प्रेम

लखमी चन्द
लेखाकार
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

हम निस्वार्थ भाव से किसी से प्रेम करते है तो मनुष्य हो या जानवर वो भी हमें उसी भाव से प्रेम करते हैं।

यह कहानी भी उसी निस्वार्थ प्रेम की है जो हमें एक जानवर से मिला। एक दिन मेरे चाचा जी एक पिल्ला (कुत्ते का बच्चा) ले के आये जिसका रंग सफ़ेद, भूरी आँखें, एक मासूम-सा बच्चा थैले में चुपचाप एक कोने में बैठा था, वो अपनी भूरी आँखों से सबको देख रहा था। मेरे दादा जी को कुत्ते पालने का शौक था तो चाचा जी उन्हीं के लिए लाये थे। दादा जी ने उसे अपनी गोद में उठाया और सहलाया तो वो अपनी पलकें झपका कर मानो दादाजी को धन्यवाद कह रहा हो। दादाजी ने उसका नाम बन्टी रखा। दादा जी बन्टी को अपने साथ ही टहलाने ले जाते तथा उसे अपने साथ ही रखते, खुद खाना खाते और बंटी को भी खिलाते। दादाजी उसे पढ़ाते और वह भी अच्छे विद्यार्थी की तरह सब सीख रहा था। दादाजी बंटी को नमस्ते करने बोलते तो बंटी अपने आगे के पैरों को जोड़कर नमस्ते करता। दादाजी और बंटी के बीच एक रिश्ता बन गया था, बंटी दादाजी की हर बात मानता था। एक दिन हम सब खेत में काम करने के लिए गये और बंटी घर पर अकेला ही रह गया, जब हम शाम को घर वापस आए तो देखा कि बंटी दरवाजे पर बैठा हमारा इंतज़ार कर रहा था और वह उदास सा दिख रहा था मानो वो हमसे अपनी नाराजगी दिखा रहा हो, जब मैंने बंटी को खाना खिलाना चाहा तो बंटी ने खाना नहीं खाया फिर सभी घर वालों ने खाना खिलाने की खूब कोशिश की पर बंटी ने खाना नहीं खाया। अंत में दादाजी बंटी के पास खाना लेकर गए और उसके पास बैठकर उससे बोले, "बेटा हमें ध्यान नहीं रहा कि तू घर पर अकेला रह गया है, काम ज्यादा था इसलिए तेरा ध्यान नहीं रहा कि तू घर पर अकेला रह गया है, काम ज्यादा था इसलिए तेरा ध्यान ही नहीं आया 'और तू सुबह से भूखा है, बेटा आज के बाद तुझे अकेला नहीं छोड़ेंगे, अब खाना खा ले जिद्द न कर', इतना बोलने पर बंटी तुरंत खाना खाने लगा। सभी घर वाले बंटी की तरह हैरानी से देखने लगे कि दादाजी के कहने पर ही खाना खायेगा और किसी के कहने पर नहीं। अब बन्टी हमेशा दादा जी के साथ ही रहता। दादा जी और बन्टी के बीच अलग ही रिश्ता बन गया था वो आपस में बातें भी करते और एक दूसरे को समझते भी थे। अब दादा जी की तबीयत खराब रहने लगी तो बन्टी उन्हीं के कमरे में रहता।

एक दिन दादाजी का देहांत हो गया। घर में दुःख का माहौल था, बन्टी दादाजी के शरीर के पास ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहा था। उसके आँखों में आंसू थे तब पापाजी बोले बेटा इसे दूर रस्सी से बांध दे। उस दिन मैं बन्टी को रस्सी से बांध देता, वो रस्सी तोड़के आ जाता। बन्टी ने कम से कम तीन से चार बार रस्सी तोड़ी थी फिर मैंने उसे कमरे में बंद कर दिया तथा उसके भौंकने की आवाज भी कम आ रही थी। हमने दादाजी के शरीर का अंतिम संस्कार अपने बगीचे में किया जो गाँव से थोड़े ही दूरी पर था और घर वापिस आ गये। जब शाम को पापाजी ने मुझसे कहा कि बन्टी को खाना खिला दे जो सुबह से भूखा है, मैं खाना लेकर बन्टी के कमरे के पास गया और जैसे ही दरवाजा खोला बन्टी एक दम से बाहर निकला और देखने और भोंकने लगा और भाग गया हमने उसे सब जगह देखा पर बन्टी कहीं नहीं मिला। जब सुबह हम बगीचा गये तो देखा बन्टी एक साइड में जमीन पर अपना सिर रखकर बैठा है और उसकी आँखों से निकले आँसुओं के निशान बता रहे है कि वह रात भर रोया है, हम उसे जैसे-तैसे घर ले आए वो उदास रहने लगा मानों उसकी पूरी दुनिया ही उजाड़ गयी हो, उसने खाना-पीना सब छोड़ दिया और एक महीने में ही उसने अपने प्राण त्याग दिये। वह दादाजी से बहुत प्रेम करता था इसलिये बिछड़ने का गम सहन नहीं कर सका और इस दुनिया से चला गया।

"हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।" – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

समोसा पुराण

बी.एन.भंसाली
वरिष्ठ प्रबंधक (परि./विप.)
प्रधान कार्यालय, कोलकाता

ब्रह्माण्ड के किसी भी हलवाई की दुकान पर दो चीजें होना जरूरी है वर्ना वह दुकान हलवाई की दुकान नहीं कहलाती..... पहला तो हलवाई खुद और दूसरा समोसा।

संसार की एकमात्र ऐसी रचना जिसके तीन कोने होने के बावजूद भी शान से सीना तान कर खड़ा हो जाता है... हलवाई की दुकान पर जब समोसे भर कर रखे जाते है तो तले जाने से पहले पूरी समोसा मंडली पंक्तिबद्ध रूप से यूँ ट्रे में खड़े दिखती हैं, मानो सफेद वर्दी पहने जवान सावधान की मुद्रा में खड़े होकर गार्ड ऑफ ऑनर दे रहे हों। अपने इसी शाही अन्दाज़ के कारण सैकड़ों वर्षों से समोसा स्नैक फूड का अघोषित सम्राट है और अपनी दो महारानियों यानी कि हरी चटनी और लाल चटनी के साथ फूडियों के दिलों में राज करता है।

अमीर-गरीब में फर्क नहीं करता... एयरपोर्ट लाउंज की फैंसी लुटेरी कॉफी शॉप में "टू समोसास फॉर टू हंड्रेड फिफ्टी रूपीज" में भी मिलता है और डाकखाने के सामने टीन के पतरे को लोहे की तार के साथ बिजली के पुराने खम्भे के साथ बाँध कर बनायी गई टपरी पर "दस के दो" भी मिलता है... ताज होटल की चाँदी की प्लेट में भी परोसा जाता है और पुल के नीचे वाले ठेले पर अखबार में लिपटा हुआ भी मिलता है। मतलब कुल मिला कर बड़े वाले सेठ जी और सेठजी के घर का नौकर दोनों बराबर स्वाद लेते है..

सड़क के किनारे किसी ठेले पर छोले और चटनी के साथ स्वाद लेते हुए किसी नयी-नयी जॉब पर लगे हुए कूरियर कम्पनी के डिलीवरी बॉय के फोन पर जब कॉल आती है और वो सामने से रिप्लाई करता है कि "मैं लंच कर रहा हूँ" तो कसम से समोसे को इतना प्राउड फील होता होगा कि उसके अंदर के आलू "अजीमो शान शहंशाह" वाले बैकग्राउंड म्यूज़िक पर नाचने लगते होंगे... बस यूं समझिये कि जहाँ कुछ भी खाने को नहीं मिलता वहां पर भी समोसा हमेशा प्राणरक्षक का काम करता है।

जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में मौत और दुकान में ग्राहक के आने का कोई निश्चित समय नहीं होता... ठीक ऐसे ही समोसा खाने का भी कोई निश्चित समय नहीं है... पूरे हिंदुस्तान में ही नहीं विश्व के कई देशों में सुबह-सुबह नाश्ते में खाया जाता है। देश भर की फैक्टरियों, कम्पनियों की कैंटीन में तो दिन भर खाया जाता है... स्कूल कॉलेजों की कैंटीन में अनगिनत बनती बिगड़ती प्रेम कहानियों का गवाह बना है... इन कैंटीनों की कड़ाही में दिन भर निरंतर उत्पादन होता ही रहता है।

लेबर को ओवरटाइम का पैसा भले ही बीस रुपए कम दे दो पर बीच में एक ब्रेक लेकर चाय के साथ दुई समोसा खिला दो फिर देखो कैसे लेंटर डालने का काम भाँप से निपटता है।

समोसा कहीं मैश किए हुए आलू से भरा जाता है तो कहीं कटे हुए चौकोर आलुओं से... देश भर में कहीं भी किसी स्कूल में निरीक्षक आ जाएँ, किसी कम्पनी में ऑडिटर आ जाएँ, दुकान पर कोई पुराना ग्राहक खरीदारी करने आ जाए तो ट्रे में चाय के कप के साथ समोसा होना उतना ही स्वाभाविक है जितना कि सेटमेक्स पर बार-बार सूर्यवंशम का आना। फिर चाहे चाय के साथ चिप्स, बिस्कुट, भुजिया कुछ भी हो पर अतिथि के लिए "अरे एक समोसा तो लीजिए" का आग्रह सम्बोधन एक सम्मान सूचक वाक्य माना जाता है।

भारत के राष्ट्रीय बैंक की पदवी के लिए चाहे तो कोई सर्वे करवा लीजिए चाहे वोटिंग, मेरा दावा है कि इस पद पर समोसे का चुनाव होना 100% है... यह मैं नहीं कह रहा है बल्कि विश्व भर में समोसे के करोड़ों चाहने वाले कह रहे हैं।

World Blood Donor Day
On 14th June 2022
DONATE BLOOD
AND BE THE REASON FOR
SOMEONE'S EXISTENCE.

CELEBRATES
INTERNATIONAL
WOMEN'S
DAY
HEAD OFFICE, KOLKATA

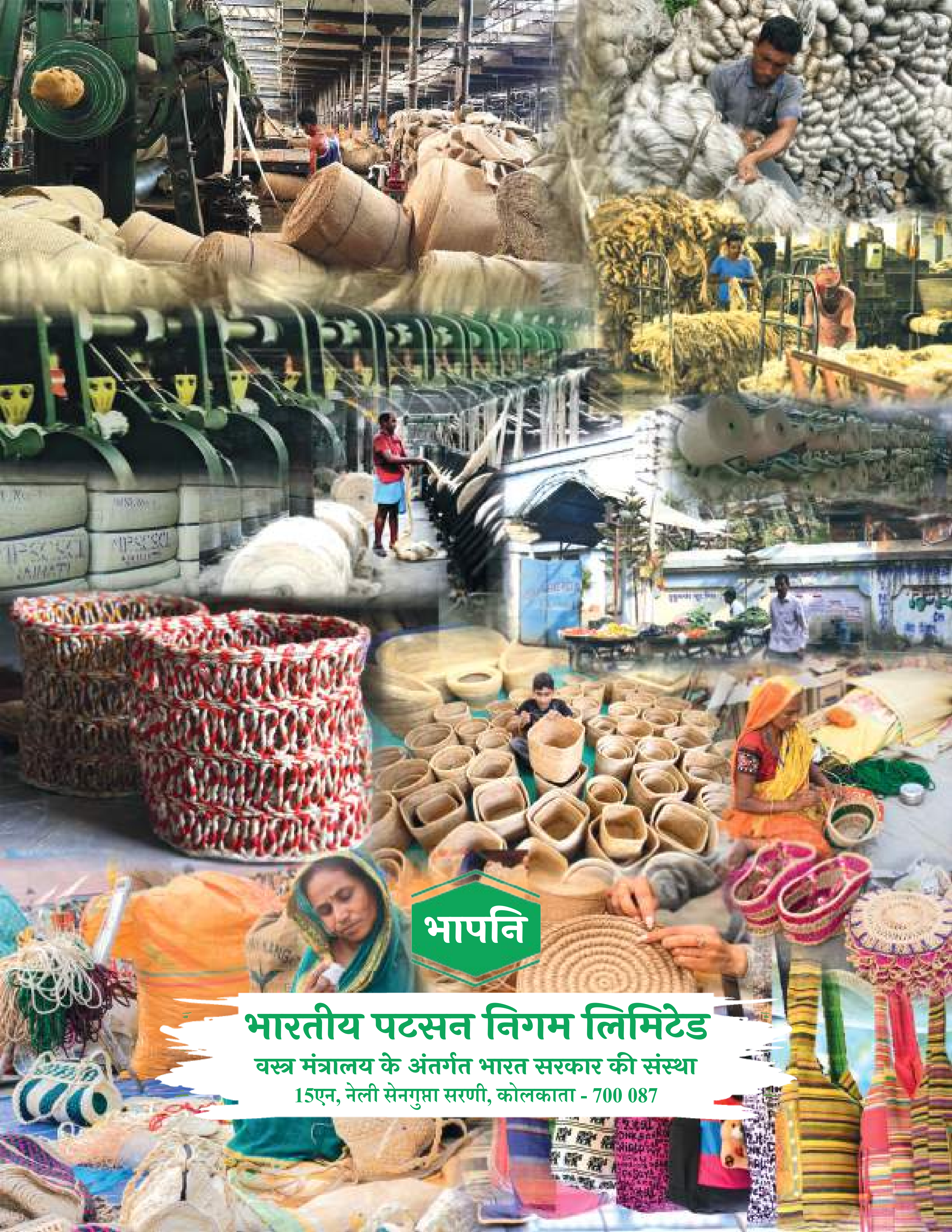

भापनि

भारतीय पटसन निगम लिमिटेड

वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत भारत सरकार की संस्था

15एन, नेली सेनगुप्ता सरणी, कोलकाता - 700 087